Front Cover Design (Title 1)
Use last files sent on Aug 19th for Title pages 1-4

Brahm Gyaan

AMRUT KUMBH

श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक (कल्कि) अवतार
संक्षिप्त परिचय

Front Back Cover (Title 2)

।। श्री विजयाभिनंद बुद्ध जी को प्रणाम है ।।

नमो नमः सुशान्ताय दीप्तिरूपाय तेजसे।
विधिहीनाय कांताय जगतः कांतिरूपिणे।।

ऊँ नमः ऊँ नमौ वै बुद्धरूपाय कलंकिता (कल्किता) यै व ऊँ नमः ऊँ नमः ऊँ नमो धाम रूपाय वै शान्ति रूपाय वै ते नमस्ते नमः।
——बुद्ध गीता 57 (भविष्य पुराण), बुद्ध स्तोत्रम् 1(लिंग पुराण)

- जो अत्यधिक सुंदर एवं शांति स्वरूप, ज्ञानमयी दीप्ति से भरपूर, तेजोमय स्वरूप वाले, लौकिक कर्मकाण्डों से रहित, सुख स्वरूप, संसार को ब्रह्मज्ञान की आभा से भरपूर करने वाले हैं।
- जो सम्पूर्ण जगत के स्वामी हैं, और जागृत बुद्धि रूपी घोड़े पर विराजमान हैं।
- जो सबकी बुद्धि को सुंदर (जागृत) करके अखण्ड मुक्ति प्रदान करने वाले हैं।
- जो सत्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों एवम् इनके कारण होने वाले कर्मों से रहित हैं।
- जो अपने ब्रह्मज्ञान से स्वयं आदिनारायण को भी निराकार से परे का ज्ञान प्रदान कराके उन्हें जागृत एवं अखण्ड स्वरूप प्रदान करने वाले हैं।
- जो मोह रूपी नींद से परे स्थित परब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म के भी स्वामी हैं।
- जो सभी आत्माओं के धाम स्वरूप व परमशान्ति के स्वरूप है और अपनी आत्माओं के प्रति प्रेम के संबंध को निभाने वाले हैं।

प्रकाशक:

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान

Shri Prannath Global Consciousness Mission

संपर्क सूत्र :

श्री निजानन्द आश्रम, वड़ोदरा

नेशनल हाइवे नं 8 बाईपास, सयाजीपुरा, वड़ोदरा 390019

Email: premseva7@yahoo.com; manulpdc@yahoo.com

Ph: 989-800-0168, 787-415-1371, 942-736-4535

Website: www.sriprannathji.com

श्री निजानन्द आश्रम – रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर,उत्तर प्रदेश,

Ph : 9811072951

श्री प्राणनाथ जी मंदिर, Shamlaji, Gujarat

Ph: 011919825348650

श्री निजानन्द आश्रम, Sadholi

Po: Zabreda, Dist: Haridwar, Uttarakhand

Email: shrinetrapalji@gmail.com

Website: anantshriprannath.com

Lord Prannath Divine Center, U.S.A/ Canada

914, 2nd Street, Macon, GA-31201

Email : jagni7@yahoo.com; jagnicorp@yahoo.com

Ph: 011-973-760-9238; 011-478-808-4079

Website: www.nijanand.org

विषय सूचि

1. Hindu dharm rakshak ke रूप mein- बुद्ध निष्कलंक स्वरूप
2. ब्रह्मज्ञान ही वास्तव में अमृत है।
2. कलियुग का अंतिम चरण और सतयुग का मंगल प्रभात
3. बुद्ध निष्कलंक (कल्कि) अवतार के प्रकटन का समय
4. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप की पहचान
5. कल्कि की कृपा से जगत जीवों को अखण्ड मोक्ष प्राप्त होना
6. कल्कि अवतार प्रकट हो चूके हैं
7. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप द्वारा_शाश्वत शांति
8. हरिद्वार के कुम्भ मेले में बुद्ध निष्कलंक की आरती
9. बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी – संक्षिप्त परिचय
10. श्री निजानंद दर्शन

Hindu dharm rakshak ke रूप mein- बुद्ध निष्कलंक स्वरूप

Note : Type and insert attached Hindi article here

ब्रह्मज्ञान ही वास्तव में अमृत है।

आत्म संबंधी साथियों! पौराणिक कथनों के अनुसार समूद्रमंथन के प्श्चात् देवटांगन के अमृत कुम्भ में से कुछ बूंदें भारतवर्श में चार पवित्र स्थानों पर गिरीं। ऐसी मान्यता है कि इनके जल में शही स्नान करने वाला कर्म बंधन से, अर्थात् आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

साथियों! इन मान्यताओं के साथ साथ हमारे धर्मशास्त्रों में ज्ञान की महिमा भी हमेशा सर्वोपरि बतायी गयी है। ब्रह्मज्ञान को ही वास्तव में अमृत कहा गया है। धर्मशास्त्र आध्यात्मिक मार्ग की चार मुख्य सीढ़ी मानते हैं – कर्मकाण्ड, उपासना, ज्ञान और विज्ञान।

इसलिये तो पवित्र तीर्थों में सिर्फ स्नान का कर्मकाण्ड ही नहीं बल्कि धार्मिक सभाओं, भक्ति संगीत, अध्यात्मिक वार्तालाप और सेवा के विविध प्रयोगों का आयोजन भी किया जाता है।

लेकिन होता क्या है कि लौकिक प्रवाह के प्रभाव में एक विशाल जन समूदाय विचारहीन कर्मकाण्ड और उपासना से उपर की सीढ़ियों पर ध्यान ही कम देता है। फलस्वरूप इन्हे धर्म का अपेक्षित फल नहीं मिल पाता।

प्रिय साथियों एवं धर्मप्रेमी सज्जनों! समस्त धर्मग्रंथों में कलियुग के अंतिम समय में होने वाले बुद्ध निष्कलंक स्वरूप–कल्कि नेहकलंक अवतार का वर्णन है, जिसके प्रकट होने की राह सारी दुनिया बड़ी बेसब्री से देख रही है कि कब वह अवतार आयेगा और सारी दुनिया को अज्ञान जनित दुखों से मुक्त करेगा।

वेदो कह्या आवसी, बुध ईश्वरों का ईश।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीश।।

श्री प्राणनाथ वाणी खुलासा 12/31

वैदिक (हिन्दू) धर्मग्रंथों में कहा गया है कि 28 वे कलियुग के अंतिम समय में ईश्वरों के भी ईश्वर बुध्ध निष्कलंक स्वरूप (कल्कि अवतार) इस जगत् में प्रकट होंगे। वे सारे जगत् के वास्तविक ईश्वर हैं जो कि अपने तारतम ज्ञान व जाग्रत बुद्धि के द्वारा जगत् से कलियुग का प्रभाव नष्ट करके सारे जगत् को अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगे।

आज संसार में चारों तरफ दुराचार और अशांति का वातावरण दिखायी देता है। धर्म के नाम पर चारों तरफ सिर्फ रूढ़िवाद, वर्गवाद, जातिवाद

दिखायी दे रहा है, जिस धर्म से सभी प्रेम व शांति की अपेक्षा करते हैं, वही आज आपसी (धार्मिक) झगड़े का सबसे बड़ा कारण बन गया है।

इस अज्ञान रूपी अंधकार से परिपूर्ण जगत् में जब मानवमात्र को शाश्वत सुख व शांति का कोई भी मार्ग नहीं सूझ रहा था, तब धर्मग्रंथों की भविष्यवाणी के अनुसार कलियुग के इस पवित्र घड़ी में सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिये एवं ब्रह्मात्माओं की जागनी के लिये परब्रह्म अक्षरातीत दुनिया में प्रकट हुए।

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार।
सो सत वानी सबों की करी, अब आये करो दीदार।।

श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 54/7

हां, शास्त्र कथित कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है। लेकिन प्राकृतिक एवं मानव सर्जित कारणों (दुष्कर्म, आतंक आदि अनष्टिों के आधिक्य) के प्रभाव से इनका शमन करने की शक्ति भी परमात्मा ही प्रदान करते हैं। निर्धारित समय से पूर्व कलियुग का समापन और साथ साथ सत्युग का प्रारम्भ निष्कलंक ब्रह्मज्ञान से ही सम्भव है।

साथियों! क्या ज्ञान के प्रकाश में अंधेरा टिक सकता है? अब तो श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक (कल्कि) आ ही चूके हैं। अद्भूत अन्होनी घटना घट चूकी है। अब कलियुगी अंधेरा टिक ही कैसे सकता है? निष्कलंक ज्ञान के उजाले में सतयुग का मंगल प्रभात निश्चित ही हो रहा है।

सभी धर्मग्रंथों की भविष्यवाणियों को सत्य सिद्ध करते हुए प्रियतम परब्रह्म की शक्ति एक मानव तन में प्रकट हो चूकी है। अब आकर उनके तारतम ज्ञान–जागृत बुद्धि के द्वारा सत्य की पहचान व परब्रह्म का साक्षात्कार कीजिये। आप इसी जीवन में ब्रह्मज्ञान रूपी अमृत का रसपान करके अपने निजसुख के मूल स्रोत तक पहुंचने की यात्रा शुरू कर पायें, यही हमारी सद्भावना है। आप की कुभ मेले की इस तीर्थ यात्रा की सफलता इसी में निहित है।

तीर्थ ते जे एक चित कीजे, कर्म ना बांधिये कोय।
अहनिश प्रीते प्रेम सों रमिये, तीर्थ ऐनी पेरे होय।। श्री प्राणनाथ वाणी, किरंतन 126/2, 3

ज्ञान ही गंगा है, सत्संग ही तीर्थ है। दिन रात प्रियतम परमात्मा के प्रेम में रमण करे और कर्म बंधन से मुक्त रहे।

कलियुग का अंतिम चरण और सतयुग का मंगल प्रभात

सभी धर्मशास्त्र मनुष्य जन्म को 'हीरा जन्म' कहते हैं।

मानखे देह अखण्ड फल पाईये, सो क्यूं पाये के वृथा गमाईये।।
ए तो अधखिण को अवसर, सो गमावत मांझ निंदर।।

श्री प्राणनाथ वाणी, किरंतन 3/2

क्योंकि इसके द्वारा जन्म मृत्यु के चक्कर से छूटकर अखण्ड सुख पाया जा सकता है। इसे व्यर्थ में नहीं गवां देना चाहिये। हे मानव! यह अवसर सिर्फ आधे क्षण का है, जो तुम अज्ञानता में गवां रहे हो।

विशेष रूप से वर्तमान समय 28 वे कलियुग में यह कथन इसलिये सत्य सिद्ध होता है, क्यूं कि सिर्फ इसी समय में प्रेम पूर्ण ज्ञान की सर्वाधिक महिमा है।

आज मनुष्य सर्वश्रेष्ठ निष्कलंक ब्रह्मज्ञान द्वारा आत्मा–परमात्मा की वास्तविक पहचान कर सकता है। परमात्मा से अनन्य प्रेम संबंध से जुड़ सकता है, अपने सभी कर्म–बंधनों को ब्रह्मज्ञान व प्रेम की अग्नि में जला सकता है। अपने विस्मृत परात्म स्वरूप का साक्षात्कार भी कर सकता है।

इस तरह, इसी जीवन में अखण्ड आनंद की अनुभूति सम्भव हुयी है। इस तरह से, आज का युग पूर्व के सभी युगों से श्रेष्ठ है। सच कहें तो इस प्रकार का विकसित भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख पिछले किसी भी युग में उपलब्ध नहीं था।

साथियों! विभिन्न धर्मग्रंथों में परब्रह्म की दिव्य शक्तियों के प्रकटन की दुर्लभ घटना वर्तमान 28 वे कलियुग में होना वर्णित है। इसकी कुछ महत्वपूर्ण निशानियां, जो शास्त्रों में भी वर्णिन हैं, अब प्रकट हो चूकी हैं।

जैसे कि, जब हम विश्व की और देखते हैं तो हमें चारों ओर मोह, माया, अज्ञान, आतंकवाद, वैमनस्य, अविश्वास, अंधिविश्वास एवं पाश्विक प्रवृत्तियों की चरमसीमा के दर्शन होते हैं।

आज मनुष्य मोह, माया और अहंकार से ग्रसित है। वह दिन रात संसारी कामनाओं की दौड़भाग में व्यस्त है। उसे पता ही नहीं चलता की अपना हीरा जन्म हाथ से कैसे गंवा दिया।

श्रद्धाहीनता और पशुवृत्ति से आज मानवजाति कलंकित हो चूकी है। धर्मों में बाहरी आडम्बर और अहंकार की खींचातानी सर्वत्र नजर आती है। धर्मों में कर्मकाण्ड को बहुत ही अधिक प्रधान्यता दिया जाता है। आध्यात्मिकता विहिन धर्म मनुष्य के लिये बिना रोशनी वाले सूर्य के समान बन गया है।

ऐसे विकट समय में परब्रह्म की कृपा से निष्कलंक ज्ञान और सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक विज्ञान प्रकट हो चूका है। प्रेम और ज्ञान पूर्ण श्रद्धा के अखण्ड प्रकाशवान सूर्य का उदय हो चूका है।

परब्रह्म के आनंद स्वरूप सद्गुरू तारतम ज्ञान लेकर पधारे हैं। निष्कलंक ब्रह्मज्ञान के प्रकाश में दिखावे मात्र की कर्मकाण्डी धार्मिकता

समाप्त हो रही है। अब यह दृढ़ हो रहा है कि ब्रह्मज्ञान रूपी अमृत से प्रेम रूपी जीवन पा लेना ही अखण्ड मुक्ति है।

बुद्ध निष्कलंक के ब्रह्मज्ञान से शरीर रूपी कब्र में सोयी पड़ी आत्मा को जगाने का अर्थात् मृत्यु के भय से मुक्त होने का अनमोल अवसर मनुष्यों को मिला है।

तो आइॅए! सर्वप्रथम हम धर्मग्रंथों के अनुसार बुद्धनिष्कलंक स्वरूप के प्रकटन के समय की समीक्षा करेंगे।

बुद्ध निष्कलंक (कल्कि) स्वरूप के प्रकटन का समय

समान्य रूप से कलियुग की आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष मानी जाती है। किंतु अभी कलियुग के मात्र लगभग 5000 वर्ष व्यतीत हुए हैं, इस हिसाब से कलियुग का अंतिम समय बहुत दूर प्रतीत होता है, जिससे बुद्धनिष्कलंक स्वरूप के अभी प्रकटन की कोई सम्भावना नहीं दिखती। किंतु ग्रंथों के गुह्य कथनों का चिंतन करने पर ज्ञात होता है कि कलियुग में पाप की अधिकता के कारण कलियुग की आयु घट कर कम हो जाती है।

शास्त्रे आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटें दिन पापें लिख्या माहें शास्त्रों, सो पाईये अर्थ अंदर के विचार।।

श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 58/17

गहराई से विचार करने पर समझ में आता है कि पापों की वजह से कलियुग की उम्र कम होते होते मात्र 5500 वर्ष बचती है।

कबीर जी कह रहे हैं कि जब 4550 वर्ष कलियुग के व्यतीत हो जायेंगे तब बुद्ध निष्कलंक स्वरूप का प्रकटन होगा। कलियुग में कुल 3412 ग्रहण पड़ेंगे। सूर्य या चंद्रग्रहण के हिसाब से प्रति ग्रहण 125 वर्ष की आयु कलियुग की कम हो जायेगी, जिससे 4,26,500 वर्ष उम्र घट जाती है, और मात्र 5500 वर्ष बचते हैं। उसमें भी 4550 वर्ष जब व्यतीत हो जायेगा तब कल्कि अवतार का प्रकटन होगा।

इसी तथ्य को **भविष्यदीपिका** ग्रंथ अ. ३ में वशिष्ठ जी ने राम जी से इस प्रकार कहा है:–

दस सहस्त्र वर्षाणि पंच सुर्येन्दू पर्वणि। कलक्षयं भविष्यति सप्ततारैक स्वगृही।।

शालिवाहन शाकात् तु गत षोडशकं शतम्। जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।

वशिष्ठ जी राम जी से कहते हैं कि ''हे वत्स, कलियुग के अंत में होने वाला अवतार कलियुग के आदिचरण में ही हो जायेगा'' तब रामचंद्र जी ने

पूछा कि ''हे वशिष्ठ जी, शास्त्रों में तो कलियुग के अंत में होना लिखा है, क्या वह मिथ्या है।'' वशिष्ठ जी कहते हैं ''नहीं, वह भी सत्य है। कलियुग में पाप–आधिक्य के कारण सूर्य और चंद्र ग्रहण अधिक पड़ेंगे। जिससे कलियुग की आयु का हास हो जायेगा। सूर्य चंद्र के 5 ग्रहण पड़ने पर 10 सहस्त्र आयु कम हो जायेगी। उस समय सप्ततारा स्वगृही होकर विचरेंगे। कलियुग में होने वाले शालिवाहन राजा के 1600 शक (वर्ष) व्यतीत होंगे, तब समस्त जगत् जीवों के कल्याण के लिये कल्कि (बुद्धनिष्कलंक) अवतार का प्रादुर्भाव होगा।

इसी तथ्य को **बुद्ध गीता** 12 में इस प्रकार कहा गया है : वाराह कल्प के अट्ठाइसवे कलियुग के प्रारम्भ में ही श्री विजयाभिनंद बुद्ध जी का यह स्वरूप प्रकट होगा। तब सर्वत्र ही अपने और पराये का यह भेद नहीं हो सकता है।

भविष्योत्तर पुराण उ.ख. अ. 72 ब्रह्म प्रहर में भी बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के प्रकटन का वही समय बताया गया है। कि जब हिंदू और मुसलमानों में परस्पर विरोध होगा एवं औरंगजेब का राज्य होगा, तब विक्रम संवत् 1738 में अक्षरब्रह्म से भी परे सच्चिदानंद परब्रह्म की शक्ति भारतवर्ष में इंद्रावती आत्मा के अंदर विजयाभिनंद बुद्धनिष्कलंक स्वरूप में प्रकट होगी। वह चित्रकुट के रमणीय वन के क्षेत्र (पद्मावती पुरी, पन्ना) में प्रकट होंगे। इस तथ्य को बुद्ध गीता 34 में भी बताया गया है ।

सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैतीस।
बैठाने साका विजयाभिनंद का, यों कहे सास्त्र और जोतीस।।

श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 58/18

इस प्रकार भविष्य कथन करने वाले समस्त धर्मग्रंथ एवं शास्त्र कहते हैं कि शालिवाहन राजा के जब 1600 वर्ष व्यतीत होंगे एवं विक्रमादित्य राजा का संवत् 1735 चल रहा होगा उस समय जगत् में बुध निष्कलंक स्वरूप का प्रकटन होगा एवं उनके नाम से विजयाभिनंद बुध जी की शाका प्रारम्भ होगी।

बुद्धनिष्कलंक (कल्कि) स्वरूप की पहचान

धर्मग्रंथों में बताये अनुसार वह समय (वि. सं. 1735 व शक्संवत् 1600) गुजर चुका है किंतु किसी को भी ध्यान नहीं है कि वह स्वरूप प्रकट हुआ है या नहीं। सभी किसी ऐसे चमत्कारिक व्यक्तित्व की अपेक्षा कर रहे हैं जो सफेद घोड़े पर सवार होकर आयेगा और उसके हाथ में तलवार होगा जिससे वह दुष्टों का संहार करेगा। धर्मग्रंथों का वास्तविक आशय ना समझने से ही ऐसी भ्रांतियां हैं।

तदा स भगवानकल्किः पुराण पुरूषोदभवः।
दिव्यं वाजिनम् आरूह्य खड्गीवर्मी च चर्मधृक।।
म्लेच्छास्तान्दैत्य भूताश्च हत्वायोगं गमिष्यति।। भविष्यपुराण प्र. प. 3 ब. 26 श्लोक 1

अर्थात् वह परब्रह्म पुरूष निष्कलंक दिव्य घोड़े पर बैठकर, तारतम ज्ञान रूपी तलवार से इश्क बंदगी रूपी कवच और सत्य रूपी ढाल से युक्त होकर अज्ञान रूपी म्लेच्छ को मारकर सबको जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगे। धर्मग्रंथों का वास्तविक आशय यह है कि बुद्ध निष्कलंक स्वरूप, जागृत बुद्ध (संशयरहित शुद्ध बुद्धि) रूपी श्वेत घोड़े पर बैठकर, तारतम ज्ञान रूपी तलवार के द्वारा सभी मानवों के अंदर स्थित अज्ञान व दुर्बुद्धि का नाश करेंगे। इसी बात को **बुद्ध स्तोत्रम्** 5 में भी स्पष्ट किया गया है।

श्वेतवर्णे च तीव्रे च चंचले ह्यंश रूपिणे।
कृतासनाय पूर्णाय पुनस्तस्मै नमो नमः।। बुद्ध गीता 59

अर्थात् तीव्र वेग से गमन करने वाले अपने अंशरूप श्वेत रंग के चंचल घोड़े अर्थात् सभी धर्मग्रंथों के रहस्य को पल भर में स्पष्ट करने वाली एवं संशय रहित करने वाली जागृत बुद्धि रूपी घोड़े पर सवार पूर्णब्रह्म के स्वरूप श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक श्री प्राणनाथ जी को बारम्बार प्रणाम है।

चरं चैवाचरं चैव ज्ञाननिष्ठं न संशयः।
सुरश्चैवासुरश्चैव ह्येकीभूतगणस्तथा।।
न भेदः खलु जायेत यदा बुद्धो भविष्यति।। बुद्ध गीता 14

अर्थात् जब श्री विजयाभिनंद बुद्ध जी प्रकट होंगे, तो उस समय चर एवं अचर सभी प्राणी जागृत बुद्धि के दिव्य ज्ञान में सराबोर हो जायेंगे, इस बात में कोई भी संशय नहीं है। सुर और असुर (सतोगुणी व तमोगुणी मनुष्य, हिन्दू–मुसलमान–सिक्ख–ईसाई) भी एक रूप हो जायेंगे अर्थात् उनकी ब्रह्मसंबंधी धारणा एक समान हो जायेगी तथा उनमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रह जायेगा।

अक्षरातीत एषो वै पुरूषो बुद्ध उच्यते।
तेजोमयश्चादिरूपस्तस्यावतार उच्यते।। बुद्ध गीता 17

अर्थात् यह श्री विजयाभिनंद बुद्ध जी ही अक्षरातीत पुरूष कहे जाते हैं। ये अत्यंत तेजोमय हैं तथा मूल स्वरूप परब्रह्म के अवतार कहे जाते हैं।

बुद्धनिष्कलंक स्वरूप की कृपा से जगत् जीवों को अखण्ड मोक्ष प्राप्त होना

धर्मग्रंथों में बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के विषय में वर्णित है कि उनकी कृपा से ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने के कारण संसार के समस्त प्राणी योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड मोक्ष प्राप्त करेंगे। आईये उन भविष्यकथनों का अवलोकन करते हैं।

निद्रायां च स्वयं जाता लयं प्राप्ता न संशयः।
परं बुद्ध स्वरूपं यत्तज्ज्ञाते धाम रूपिणः।। बुद्ध गीता 46

अर्थात् स्वयं निद्रा (निराकार–मोहतत्व) से उत्पन्न होने वाले सभी प्राणी महाप्रलय के समय पुनः उसी में लय हो जाते हैं। किन्तु परब्रह्म स्वरूप श्री विजयाभिनंद बुद्ध जी का ज्ञान हो जाने पर सभी प्राणी अखण्ड धाम में विराजमान हो जायेंगे।

ज्ञानहर्ष समुद्रे वै जगन्मग्नं भविष्यति।
तत्स्वरूपं जगतसर्वं ज्ञातव्यं नात्र संशयः।। बुद्ध गीता 22

श्री विजयाभिनंद बुद्ध जी के प्रकट होने से यह जगत ज्ञान और आनंद के सागर में डूब जायेगा। तथा यह सम्पूर्ण जगत उस योगमाया (बेहद) के ब्रह्माण्ड में जानने योग्य जागृत एवं अखण्ड स्वरूप वाला हो जायेगा। इसमें कोई भी संशय नहीं है।

उस समय यह चर अचर सम्पूर्ण जगत् ही चारों ओर से अक्षर ब्रह्म के बेहद धाम में अखण्ड एवं तेजोमय रूप वाला हो जायेगा। श्री बुद्ध जी की कृपा से पशु और अपशु चर और अचर तथा मोह नींद–निराकार से उत्पन्न होने वाले जो भी प्राणी हैं, वे सभी अखण्ड स्वरूप वाले हो जायेंगे। (बुद्ध गीता 36, 48)इस पृथ्वी पर स्थिर, चलायमान, चेतन एवं जड़ आदि जितने भी पदार्थ स्थित हैं, वे सभी योगमाया के चेतन ब्रह्माण्ड में अखण्ड स्वरूप वाले हो जायेंगे। (बुद्ध स्तोत्रम् 10)

इस सम्बन्ध में सिख पंथ के ''पुरातन सौ साखी'' (भविष्य की साखियां) ग्रन्थ के पृष्ठ ६५–६६ पर लिखा है–

नेहकलंक होय उतरसी महाबली अवतार।
संतरक्षा जुग जुग करे, दुष्टा करे संहार।।
नवा धर्म चलावसी, जग में होवनहार।
नानक कलजुग तारसी, कीर्तन नाम आधार।।

अर्थात् वह सर्वशक्तिमान परमात्मा निष्कलंक स्वरूप में प्रकट होंगे, वे संसार में नया धर्म (ज्ञान–मार्ग) चलायेंगे, जिसके द्वारा कलियुग के सभी प्राणियों को भव से पार करेंगे।

इस प्रकार समस्त धर्मग्रंथों के प्रमाणों सेयह सिद्ध होता है कि बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के दुनिया में प्रकटने का समय हो चूका है, और वे आ चूके हैं।

बुद्ध स्तोत्रम् 7 में कहे अनुसार स्वयं कुछ समय तक गुप्त रूप से पृथ्वी पर विचरण करेंगे। इसलिये दुनिया में सर्वत्र उनकी पहचान जाहिर नहीं है। वे स्वयं ही परमधाम के ज्ञानमयी स्वरूप होंगे तथा सबको उसका साक्षात्कार कराने वाले होंगे। इस कथन में कोई भी संशय नहीं है।

बुद्धनिष्कलंक स्वरूप (कल्कि अवतार) का प्रकटन हो चूका है

बुद्धनिष्कलंक स्वरूप प्रकट हो चूके हैं ।

सारे जगत् के स्वामी प्राणों के नाथ अक्षरातीत परब्रह्म दुनिया में प्रकट हो चूके हैं। हम उनके स्वरूप की ज्ञान–विवेक की दृष्टि से पहचान करें। उनके श्रीमुख से अवतरित ब्रह्मज्ञान का मनोमंथन, उस पर अटल श्रद्धापूर्ण अमल और निजआत्म स्वरूप का ध्यान ही एक राजमार्ग है। तो आईये... ब्रह्मज्ञान के अमृत कुम्भ में से कुछ बूंदें अपनी आत्मा को पिलाईये।

अब सो साहेब आईयां, सब सृष्टी करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

अब वे सारे जमाने के मालिक–साहेब ने आकर अपने तारतम ज्ञान एवं जाग्रत बुद्धि के द्वारा सारे संशयों को दूर कर सबकी बुद्धि को निर्मल कर दिया है। अब मोह–अहंकार के पर्दे को दूर कर वे दुनिया को अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगे।

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्मसृष्टि सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आये करो दीदार।।

ब्रह्मात्माओं के प्रियतम पूर्ण ब्रह्म परमात्मा एक मानव तन (महामति जी के धाम दिल) में प्रकटे हैं। ईश्वरी सृष्टि एवं जीव सृष्टि, सभी आकर उनका दर्शन कीजिये।

सुनियो दुनिया आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबुं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम।।

आखिरी युग के दुनिया के लोगों! तुम्हारे बड़े भाग्य हैं कि तुम्हें परमात्मा का तारतम ज्ञान सुनने का मंगल अवसर मिला है । अतः तुम अपने आत्म स्वरूप की और सत–चिद्–आनन्द प्रियतम की दिव्य स्वरूप, धाम और प्रेमानन्द लीला की पहचान करके अपने ज्ञानचक्षु से उनका दर्शन करो।

सो बुधजीएं सास्त्र ले, सबही को काढ़्यो सार।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार।।

बुद्ध निष्कलंक स्वरूप ने समस्त शास्त्रों का सार निकालकर अध्यात्म के अनसुलझे रहस्यों का स्पष्टीकरण किया। धर्मग्रंथों का वास्तविक अभिप्राय

समझाकर एक सत्य परब्रह्म व आत्मा के निजस्वरूप की पहचान करायी।

ब्रह्मलीला ढ़ांपी हती, अवतारों दरम्यान।

सो फेर आये के अपनी, प्रगट करी पेहचान।।

ब्रज एवं रास में श्री कृष्ण के तन में होने वाली ब्रह्मलीला, विष्णु भगवान के अवतार के रूप में ढप गयी थी। अब पुनः आकर उन्हीं परब्रह्म अक्षरातीत ने अपनी पहचान प्रकट की है कि सिर्फ ब्रज, रास लीला तक मैं ही श्रीकृष्ण के रूप में था।

आई नूर बुध वैराट माहीं, विश्व करी सो निरविकार।

छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाएँ सो मंगलचार।। श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 54/4

बुध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के साथ परमधाम की दिव्य जागृत बुद्धि संसार में आ गयी है, जिसने दुनिया को निर्विकार (संशयरहित) कर दिया है। अब छोटे–बड़े, नर–नारी सब मिलकर आनंदपूर्वक मंगलगीत का गायन कर रहे हैं।

करनी करम कछु ना रह्या, धनी बड़े कृपाल।

सो बुधजीए मारया, जो त्रैलोकी का काल।। श्री प्राणनाथ वाणी खुलासा 13/113

विजयाभिनंद बुद्धजी की कृपा से तारतम ज्ञान पाकर कर्मों का बंधन खत्म हो गया। बुधजी ने जागृत बुद्धि रूपी घोड़े पर सवार होकर, तारतम ज्ञान रूपी तलवार से अज्ञानता रूपी राक्षस को मार दिया, जिसकी वजह से त्रैलोक के स्वामी विष्णु भगवान सहित सारी दुनिया मृत्यु के आधीन थी।

सुर असुर सबों का ए पति, सब पर एकै दया।

देत दीदार सबन को सांई, जिनहूँ जैसा चाह्या।।श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 59/7

वे बुध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई सभी की आत्मा के स्वामी हैं। उनकी दया सभी जगत् जीवों पर एक समान रहती है। वे सबको उनकी भावना के अनुसार दर्शन देते हैं।

रसम करमकाण्ड की, हुती ऐते दिन।

अब ईलम बुधजी के, दई सबों प्रेम लक्षण।। श्री प्राणनाथ वाणी खुलासा 13/65

इतने दिनों तक संसार में कर्मकाण्ड (जप, तप, यज्ञ आदि मात्र) का ही प्रचलन था। अब बुध निष्कलंक स्वरूप ने तारतम ज्ञान के द्वारा (आत्म के निजस्वरूप व प्रियतम अक्षरातीत से मूल संबंध की पहचान कराके) प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करी, बुधजीएँ इत आए।

अक्षरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए।। श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 52/9

बुध निष्कलंक स्वरूप ने आकर तारतम ज्ञान के द्वारा ब्रह्मसृष्टियों की पहचान जाहेर कर दी है। दिव्य परमधाम में प्रियतम परब्रह्म एवं ब्रह्मप्रियाओं के मध्य होने वाली प्रेम व आनंदमयी लीलाओं का विस्तृत वर्णन कर दिया है।

बुद्ध निष्कलंक स्वरूप द्वारा शाश्वत शांति

बुद्ध निष्कलंक स्वरूप के प्रताप से संसार में चारों तरफ सुख–शांति का साम्राज्य स्थापित हो जायेगा। उस समय की स्थिति श्रीप्राणनाथ जी के श्रीमुख से अवतरित तारतम वाणी में इस प्रकार बतायी गयी है।

जात एक खसम की, और ना कोई जात।

एक खसम एक दुनिया, और उड़ गई दूजी बात।। श्री प्राणनाथ वाणी सनंध 34/17

इस तारतम ज्ञान को प्राप्त कर लेने के बाद दुनिया से जाति–पांति का भेदभाव खत्म हो जायेगा। एक प्रियतम परब्रह्म से सबकी आत्मा का संबंध जुड़ जाने से सब एकमात्र उसी की जाति के हो जायेंगे। सबकी आत्मा का एक ही प्रियतम होगा। सारी दुनिया एक हो जायेगी और मतभेद की सारी दीवार खत्म हो जायेगी।

एक सृष्ट धनी भजन एकै, एक गान एक आहार।

छोड़ के बैर मिले सब प्यार सों, भया सकल में जयजयकार।।श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 54/12

बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की कृपा से उस दिन सारी दुनिया एक हो जायेगी, सबकी आत्मा का प्रियतम परब्रह्म भी एक ही होगा, सब एक ही तरीके से उनकी प्रेम लक्षणा भक्ति करेंगे। सभी एक परब्रह्म का ही गुणगान करेंगे। सभी का एक जैसा सात्विक भोजन होगा। आपसी दुश्मनी को भूलकर सभी आपस में प्रेमपूर्वक मिलेंगे। चारों तरफ प्रियतम प्राणनाथ के नाम का ही जय–जयकार होगा।

छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान।

जात पांत ना भांत कोई, एक खानपान एक गान।। श्री प्राणनाथ वाणी सनंध 27/24

अपना अपना अहंकार छोड़कर सभी धर्मावलम्बी आपस में प्रेम पूर्वक मिलेंगे। जाति–पाति आदि किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहेगा। सबका एक ही जैसा खान–पान होगा और सब मिलकर एक प्रियतम परब्रह्म का गुणगाान करेंगे।

खायें पियें सब मिल के, बंदगी एक खसम।

नाम न्यारे सब टल गये, हुई नई एक रसम।। श्री प्राणनाथ वाणी सनंध 36/19

सब मिलकर प्रेमपूर्वक एक साथ खायेंगे–पियेंगे। एक ही अक्षरातीत प्रियतम परब्रह्म की बंदगी (भक्ति) करेंगे। अन्य इष्टों के नाम लोगों के दिलों से निकल जायेंगे। इस प्रकार एक नयी परम्परा का शुभारम्भ होगा।

सनमुख सब एकरस भये, भाग्यों सो विश्व को ब्रोध।

घर घर आनंद उच्छव, कुली पोहोरो काढ़्यो सबको क्रोध।। श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 55/21

सभी आपसी विरोधों–मतभेदों को छोड़कर एक रस होकर प्रियतम प्राणों के नाथ अक्षरातीत परब्रह्म के चरणों आ जायेंगे। घर–घर आनंद–उत्सव मनाया जायेगा। इस प्रकार संसार से कलि–दज्जाल का प्रभाव (काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या–द्वेष, अहंकार आदि) समाप्त हो जायेगा।

बाघ बकरी एक संग चरें, कोई ना करे किसी सों बैर।

पशु पंखी सुखे चरें चुगें, छुट गयो सबको जेहेर।। श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 55/20

अखण्ड मुक्ति स्थान (बहिश्तों) में आपस में इतना प्रेम होगा कि बाघ और बकरी भी एक साथ विचरण करेंगे। कोई भी प्राणी किसी से वैर–हिंसा नहीं करेगा। वहां के दिव्य स्वरूप पशु–पक्षी सुखपूर्वक चरेंगे–चुगेंगे अर्थात् भोजन करेंगे। आपसी ईर्ष्या–द्वेष रूपी जहर सबके दिलों से पूर्णतः निकल जायेगा।

मुक्त दई सब जीवों को, पावें पशु पंखी नर नार।

होसी वैराट धंन धंन, सुख आनंद अखण्ड अपार।। श्री प्राणनाथ वाणी किरंतन 55/24

इस संसार के समस्त जीवों पशु–पक्षी, नर–नारी आदि सबको अखण्ड मोक्ष की प्राप्ति होगी। इस प्रकार यह जागनी के ब्रह्माण्ड के समस्त जीव धन्य धन्य हो जायेंगे। चारों तरफ अखण्ड आनंद–शाश्वत सुखों का साम्राज्य हो जायेगा।

हरिद्वार के कुम्भ मेले में बुद्ध निष्कलंक स्वरूप

वि. सं. 1735 के हरिद्वार कुम्भ मेला अध्यात्मिक जगत् में एक विशेष महत्व रखता है। समस्त धर्मग्रंथों की भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध करते हुये उस मेले में परब्रह्म के हृदयकमल से ब्रह्मज्ञान की विशिष्ट अमृतवर्षा हुयी। समस्त हिन्दू सम्प्रदाय, आश्रम, वर्ण, योगी, सिद्ध, जैनी, षट्दर्शनों के ज्ञानी आचार्यजनों ने इस दिव्य ब्रह्मज्ञान की गंगा में शाही स्नान किया।

बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के साथ समस्त धर्माचार्यों की धर्मचर्चा हुअी। एक परब्रह्म अक्षरातीत के स्वरूप, धाम व लीला की पहचान तारतम ज्ञान के द्वारा प्रकट हुअी । तब समस्त धर्माचार्यों ने परब्रह्म की पांच दिव्य शक्तियों से युक्त महामति जी को विजयाभिनंद बुध जी के रूप में घोषित किया और विजयाभिनंदन बुद्धजी की शाका भी प्रारम्भ की। आज बुध जी की शाका के 335 वर्ष पूर्ण हो चूके हैं।

उपस्थित सभी ने अपने आप को नवधा प्रकार की भक्ति की सीमा को पार करते हुये अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति के महासमुद्र में पाया।

जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत।१०।

अब ब्रह्मज्ञान की ज्योति का प्रकाश इतना फैलने लगा है कि इससे संसार के सभी प्राणियों के हृदय की मलीनता समाप्त हो रही है। चारों और अखण्ड आनन्द ही आनन्द का विस्तार हो रहा है। सभी ब्रह्मात्माओं के हृदय, प्रियतम परब्रह्म के दिव्य प्रेम एवं अटल श्रद्धा के श्रृंगार से सज रहे हैं। मोह और अज्ञानजनित स्वप्न की बुद्धि का लय हो रहा है। अक्षरातीत परब्रह्म का स्वरूप सबके हृदय में जगमगाना शुरू हो चूका है।

पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनीके करम जाल।
चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवों खंडों आरती।।६।। श्री प्राणनाथ वाणी

वे कृपानिधान प्रियतम अक्षरातीत बुद्ध निष्कलंक स्वरूप में प्रकट हो गये हैं तथा सम्पूर्ण संसार में चारों ओर उनकी दया का ही विस्तार दिखायी दे रहा है। उन्होंने अपनी दिव्य तारतम वाणी के द्वारा सारी दुनिया के कर्मबंधन काट दिये हैं। संसार के सभी जीव चैतन्य इस कृपा से कृत्कृत्य हो गये हैं।

त्रिदेवा सहित सभी देवी देवता श्री शुकदेव जी एवं व्यास जी भी विजयाभिनंद बुद्ध स्वरूप की वैश्विक महा आरती के लिये तैयारी कर रहे हैं।

बुध जी की जोतें कियो प्रकास,त्रैलोकी को तिमर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती।।१५।।
श्री प्राणनाथ वाणी

विजयाभिनंद बुद्ध जी के द्वारा लाये तारतम ज्ञान की ज्योति ने सारे संसार में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश कर दिया और त्रिलोक (भूलोक, अंतरिक्ष लोक व द्योःलोक) में स्थित अज्ञानांधकार का नाश कर दिया। इस प्रकार ब्रह्मात्माओं को जगाकर उनके साथ आनंद से परिपूर्ण अखण्ड जागनी रास की लीला कर रहे हैं।

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।

सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती।।१६।। श्री प्राणनाथ वाणी

प्रियतम अक्षरातीत के आदेश से श्री महामति जी इस ब्रह्मवाणी को जाहिर कर रहे हैं, जिसके द्वारा असत्य ज्ञान (अज्ञान) का नाश व सत्य ज्ञान की स्थापना कर रहे हैं। इस प्रकार आखिरत (कलियुग के इस अंतिम समय) में सबसे शिरोमणि (महत्वपूर्ण) लीला हुई, जिसके द्वारा समस्त जगत्जीव अखण्ड मोक्ष प्राप्त कर सके। इस प्रकार धरती के नवों खण्डों में श्री विजयाभिनंदन बुद्ध जी की एक नये प्रकार से (ज्ञान व प्रेम से परिपूर्ण) आरती हुई।

बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी – संक्षिप्त परिचय

अनन्त सृष्टियों के अस्तित्व के जो मूल आधार हैं, सभी आत्माओं के जो मात्र एक मालिक हैं, सर्व शक्तियों के जो मूल स्त्रोत हैं, ऐसे प्रियतम परमात्मा ही प्राणनाथ है। हां जी, हम सभी उस सागर स्वरुप सच्चिदानन्द प्रियतम की आनन्द की लहरें हैं, आत्मायें हैं। आध्यात्मिक मार्ग में इस प्रकार का परस्पर आत्मीयता का भाव केन्द्रीय है। सम्पूर्ण मानव जाति को एकात्म–भाव से, दिव्य प्रेम की तार से जोड़ना ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है।

साथियों! संसारी खेल में प्रियतम प्राणनाथ हमें सत्य और असत्य की पहचान करा कर संसार को एकसूत्र करने हेतु ब्रह्म ज्ञान लेकर पधारे हैं। इसे तारतम वाणी भी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह दिव्य ज्ञान, मोह माया के अज्ञान रुपी अंधकार को चीर कर परम आनन्ददायी दिव्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के श्रीमुख से अवतरित यह वाणी श्री कुलजम स्वरुप महाग्रन्थ में समाहित है, जो वर्तमान संसार को मिली हुई अनमोल आध्यात्मिक संपदा है। इसमें संसार के समस्त धर्म ग्रन्थों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान को तारतम के मोतियों की माला के रुप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें विशेष रुप से उन अनादि आध्यात्मिक प्रश्नों का जैसे कि– मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? मेरा प्रियतम कौन है? का निराकरण है। श्री जी फरमाते हैं कि मनुष्य मात्र प्रियतम परमात्मा की आत्म–प्रिया हैं, उनकी आत्म–अंगना हैं। इस भाव को दृढ़ कर लेने से आत्मा परमात्मा का चरमकक्षा का सुख ले सकती है।

तारतम ज्ञान का इस ब्रह्मांड में अवतरण सन् 1621 ई0 में हुआ, जब परब्रह्म अक्षरातीत ने अपनी दिव्य शक्तियों से आवेशित स्वरुप से श्री निजानन्द स्वामी धनी श्री देवचन्द्र जी (1581–1654 ई) को दर्शन दिये।

वही बीजरुप ज्ञान आगे चलकर श्री कुलजम स्वरुप रुपी वटवृक्ष बन गया, जो आज संसार को सुख शीतलता प्रदान कर रहा है।

श्री कुलजम स्वरुप निहित ब्रह्म ज्ञान का अवतरण 1659 ई0 (नौतनपुरी, जामनगर) से 1692 ई0 (पन्ना, म0प्र0) तक 33 वर्ष के अंतराल आत्म–जागृति यात्रा दरम्यान अलग–अलग जगह पर हुआ। इसमें कुल 18,758 चौपाईयां हैं, जो 17 रत्नरुप ग्रन्थों में प्रस्तुत हैं। निज आनन्द (शाश्वत सुख) के पथ पर अग्रसर आत्म खोजी के लिए तो यह सच्चिदानन्द परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञानमयी स्वरुप ही है।

इस वाणी में जो 'महामति' की छाप है, वह प्रियतम परब्रह्म की महानतम दिव्य शक्तियों का सामूहिक स्वरुप है। मिहिरराज ठाकुर (1618–1694 ई0) जिनका लौकिक नाम है, वे प्रियतम परब्रह्म की मेहर से महामति पद की शोभा प्राप्त करते हैं और इनके तन से परब्रह्म अक्षरातीत की लीला होने से उनकी पहचान करने वाला 'सुन्दरसाथ' समुदाय उन्हें प्राणनाथ के स्वरुप में प्रणाम करता है। जबकि यथार्थ में क्षर पुरुष एवं अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत परब्रह्म ही प्राणनाथ हैं।

जामनगर राज्य (गुजरात) में दीवान पद पर आसीन मिहिरराज ने अपने सद्गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्र जी (1581–1654 ई0) की प्रेरणा से भौतिक सुखों को त्याग कर आत्म जागृति अभियान का महा संकल्प लिया। बारह साल की आयु में वे अपने सद्गुरु के चरणों में आये और तारतम ज्ञान प्राप्त किया। अद्वैत प्रेम के स्वरुप की पहचान करके स्वयं सेवा, समर्पण और प्रेम की मूर्ति बन गये।

आध्यात्मिकता को अपने जीवन के केन्द्र में रख कर ही उन्होनें अपना कुटुम्ब धर्म, समाज धर्म, देश धर्म और मानव धर्म निभाया। उन्होंने मानवतावादी दृष्टि से प्रत्येक मानव में निहित आत्म–चेतना को परमात्म चेतना से जोड़ा। व्यक्ति, समाज, धर्म और विश्व मंच को एक आध्यात्मिक कड़ी से जोड़ा। अतः उनके समन्वयात्मक प्रयासों का और उनकी वाणी का सम्यक मूल्यांकन संकीर्ण सांप्रदायिक परिधि से बाहर होकर ही संभव है।

इसके साथ साथ सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण व्यावहारिक प्रश्नों को भी उन्होंने सुलझाया। वे परिवर्तनकारी सामाजिक क्रान्ति में निमित्त रुप बने। धर्म के नाम पर फैले अंध–विश्वास, अस्पृश्यता, छुआ–छूत, जाति–पाति और ऊँच–नीच के भेदभाव, अहिंसा, विविध प्रकार के व्यसनों में लिप्तता, स्त्री–वर्ग को होने वाले अन्याय, धार्मिक असहिष्णुता, दिखावे मात्र का धर्म पालन, कर्मकांडों की जड़ता, धार्मिक क्षेत्र में बाह्यआडम्बर द्वारा शोषण आदि सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आज से 400 वर्ष पूर्व की रुढ़िग्रस्त मिथ्या मर्यादाओं में

जकड़े हुए समाज को नवचेतना प्रदान की, जिसकी आज के सामाजिक जीवन में और भी आवश्यकता है।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी अहिंसा आन्दोलन और चरखे से क्रान्ति की प्रेरणा श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से अपने बचपन में अपनी माता जी पुतलीबाई के माध्यम से प्राप्त की। ऐसे विश्व के महान मानवतावादी अनेक विचारकों पर श्री प्राणनाथजी के ज्ञान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

साथियों! इस तारतम वाणी के बल से ही 1678 ई0 (संवत 1735) में हरिद्वार में महाकुंभ के पर्व पर महामति जी विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध के रुप में जाहिर हुए। इतना ही नहीं, मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में सर्वधर्म समभाव का संदेश लेकर अपने बारह सुन्दरसाथ को भी भेजे। मुगल सम्राट को धर्म का सच्चा स्वरुप बताया और अनेक हिन्दू राजाओं को भी ज्ञान से जाग्रत किया।

आखिर उन्हें मिले वीर बुन्देला छत्रसाल (1649–1731 ई0), जिन्होंने उनके संरक्षण में बुंदेलखंड में आदर्श आध्यात्मिक राज्य की स्थापना की और उसकी राजधानी पन्ना शहर (एम0पी0) को वैश्विक आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बनाया।

साथियों! ज्ञान और प्रेम तो बांटने से ही बढ़ता है। अतः आज विश्व भर में करोड़ों लोग इस ब्रह्मज्ञान के मार्गदर्शन में स्वयं आत्मजाग्रति प्राप्त करके संसार को लाभान्वित करने की सेवा कर रहे हैं। श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान से प्रेरित साथी इसी सद्भावना से आप तक श्री प्राणनाथ वाणी के पुष्पों को लेकर पहुँचे हैं।

आपका जीवन इन पुष्पों की दिव्य खुश्बू से भर जाये और आप स्वयं भी इस महक को फैलाने में जुट जायें, हम यही हार्दिक मंगल कामना करते हैं। आप के आत्मस्वरुप में कोटि–कोटि सप्रेम प्रणाम।

श्री निजानंद दर्शॅन

आज से लगभग 433 वर्ष पूर्व वि. सं 1638 में भारत की पवित्र धर्मधरा में मारवाड़ के उमरकोट गांव में श्रीदेवचंद्रजी का जन्म हुआ। जिनके अंदर परमधाम की श्री श्यामाजी की आत्मा प्रकट हुयी। 11 वर्ष की उम्रमें उनके मन में प्रियतम परब्रह्म को पाने की जिज्ञासा उत्पन्न हुयी। 40 वर्ष की उम्र तक विभिन्न मत–पंथों में खोज करने के पश्चात् वि.सं. 1678 उन्हें प्रियतम परब्रह्म ने दर्शन देकर दिव्य तारतम ज्ञान प्रदान किया और उनके अंदर आवेश स्वरूप से विराजमान हो गये।

श्रीदेवचंद्रजी ने श्रीमिहिरराजजी सहित अनेकों ब्रह्मात्माओं को जागृत किया। उनके अनुयायियों को सुंदरसाथ कहकर संबोधित किया जाता है।

श्री मिहिरराजजी का प्रादुर्भाव वि. सं. 1675 गुजरात के जामनगर में हुआ था, उनके अंदर परमधाम की इंद्रावती नाम की आत्मा थी। वि. सं. 1712 में श्रीदेवचंद्रजी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् परब्रह्म की शक्ति मिहिराजजी के अंदर विराजमान हो गयी। तब सुंदरसाथ ने उन्हें प्राणनाथ (प्राणों के स्वामी) कहकर पुकारा।

उन्होंने देश–विदेश में भ्रमण करते हुए अनेकों ब्रह्मात्माओं को जागृत किया तथा दुनिया को परमात्मा का सत्य ज्ञान प्रदान किया। उनके तन के माध्यम से परब्रह्म के आवेश से दिव्य ब्रह्मवाणी जगह–जगह अवतरित होती रही।

वि. सं. 1735 में हरिद्वार के कुम्भ मेला में जाकर समस्त धर्माचार्यों के मध्य सत्य ज्ञान का परचम लहराया। तत्कालीन मुगल शासक औरंगजेब तक भी कुर्आन पाक का प्रमाण देते हुए सत्य ज्ञान का संदेश पहुंचाया।

अंत में बूंदेलखण्ड के वीर योद्धा महाराजा छत्रशालजी श्रीप्राणनाथजी के चरणों में आये और उन्होंने अपना सर्वस्व उनके चरणों में समर्पित कर दिया। श्रीप्राणनाथजी ने पन्ना की पवित्र धरती में अपना दिव्य धाम बनाया। प्रस्तुत हैं उनकी दिव्य वाणी के मुख्य सिद्धांतः–

1. संसार नश्वर, क्षणभंगुर एवं स्वप्नवत् है।
2. मनुष्य जीवन का लक्ष्यः जन्म–मृत्यु के चक्र से मुक्ति और अखण्ड आनंद की प्राप्ति।
3. अज्ञानता ही बंधन है एवं ब्रह्मज्ञान ही मुक्ति का साधन है।
4. अपने आत्मस्वरूप की तथा परब्रह्म की पहचान से ही मुक्ति सम्भव है।
5. क्षर, अक्षर व अक्षरातीत तीनपुरूष है। क्षर एवं अक्षर से परे उत्तम पुरूष अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा है।

6ण क्षरपुरूष सृष्टि के प्रथमपुरूष आदिनारायण हैं एवं अक्षरपुरूष परब्रह्म अक्षरातीत के सत्ता के स्वरूप हैं।

7. परब्रह्म अक्षरातीत का दिव्य नूरी स्वरूप ब्रह्मपुर धाम परमधाम में है। संसार के कण कण में उनकी सत्ता मात्र विद्यमान है।
8. परब्रह्म स्वलीला अद्वैत, किशोर, शुद्ध साकार व युगलस्वरूप,

नस–नाड़ियों से रहित, दिव्य तेजोमयी व सच्चिदानंदमय है।

9. प्रेम व आनंद की लीला प्रकट करने हेतु वे परमधाम में विविध रूप से लीला करते हैं।

10. तीन प्रकार की सृष्टिः ब्रह्मसृष्टि (परमधाम की), ईश्वरीसृष्टि (अक्षरब्रह्म की) और जीवसृष्टि (स्वाप्निक/सांकल्पिक सृष्टि)।

11. ब्रजमण्डल में श्रीकृष्णजी के तन में 11 वर्ष 52 दिन तक परब्रह्म की आवेश शक्ति ने लीला की। तब श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मप्रियाओं की सुरता राधिका एवं गोपियेां के रूप में खेली।परब्रह्म व ब्रह्मप्रियाओं के द्वारा की गयी ब्रज तथा रासलीला आज भी बेहदमण्डल में अखण्ड है।

12. ब्रज व रास में श्रीकृष्णजी के तन में प्रकट होने वाली परब्रह्म की वही शक्ति इस 28 वे कलियुग के अंतिम समय में बुद्धनिष्कलंक श्री प्राणनाथजी के रूप में प्रकट हुयी है।

13. ब्रज रासलीला के बाद ब्रह्मप्रियाएं विभिन्न धर्म– जातियों में पुरूष व स्त्री के तनों में प्रकट हुयी हैं।

14. सबका मालिक एक है– ''सोई खुदा सोई ब्रह्म''। अल्लाह, परमात्मा, सुप्रिम ट्रूथ गॉड एक ही हैं।

15. सभी धर्मग्रंथ एक परमात्मा के आदेश से अवतरित हैं।

16. श्री प्राणनाथ जी हिंदूग्रंथों के अनुसार बुद्धनिष्कलंक स्वरूप, कुर्आन के अनुसार इमाम महदी साहिबुज्जमां तथा बाईबिल के सेकण्ड कमिंग ऑफ क्राइस्ट हैं।

17. सद्गुरू स्वयं आनंद स्वरूप वाले परब्रह्म हैं। उनकी दिव्य तारतम वाणी ही पथ प्रदर्शक एवं आत्मजागृति का साधन है।

18. एक परब्रह्म अक्षरातीत के प्रति अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति का पतिव्रता साधन उत्तम है। किसी भी हेतु अन्य देवी–देवों की उपासना अनावश्यक है।

19. इस नश्वर जगत् की लीला देखने ब्रह्मात्माएं परमधाम से सुरता रूप से आयी हैं। खेल देखकर वापस जायेंगी।

20. अंतिम समय में परब्रह्म,सब का न्याय करके शीघ्र ही अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगें।

Inside Back cover Page

Kshar-Akshar-Aksharateet Line Chart

Back cover (Title 4) Page

(picture of Buddhji on white horse)

धन्य है....धन्य है

- भारतखण्ड की पवित्र भूमि, जहां श्री बुद्ध निष्कलंक स्वरूप का अद्भुत ब्रह्मज्ञान प्रकट हुआ है।
- मनुष्य जन्म रूपी हीरा अवसर, जिसमें प्रत्येक मनुष्यात्मा निष्कलंक जागृत बुद्धि प्राप्त कर सकती है।
- तारतम ब्रह्मज्ञान, जिसके द्वारा बुद्धजी सम्पूर्ण संसार को अखण्ड शीतलता प्रदान कर रहे हैं।
- ये वर्तमान 28 वां कलियुग, जिस में निराकार से परे दिव्य परमधाम का निष्कलंक ज्ञान प्रकट हुआ है।
- सृष्टि जीव, जो श्री बुद्धजी के स्वरूप में स्थित होकर लौकिक चिंताओं से मुक्त हो रहे हैं और सुख–दुख, हर्ष–शोक एवं शरीर के मोह जनित द्वंदों से परे हो रहे हैं।
- परमधाम की वे आत्मायें, जो अक्षरातीत परब्रह्म के बुद्धमय स्वरूप में व्याप्त हैं तथा बुद्धजी इनके अंदर व्याप्त हैं और परस्पर जागनी रास लीला खेल रहे हैं।

–बुद्ध गीता (भविष्य पुराण), बुद्ध स्तोत्रम् (लिंग पुराण)

मंगल कामना – सप्रेम प्रणाम जी